युवा अपने जीवन में सही दिशा और दशा कैसे पायें ???

किसी भी राष्ट्र या समाज का विकास निश्चित तौर पर उसकी युवा पीढ़ी की तरक्की पर निर्भर करता है। क्या हमारी युवा पीढ़ी सही राह पर है, वह जिस दिशा की ओर अग्रसित है वह सफलता की ओर ले जाती है ? शायद नही..... आज की हमारी युवा पीढ़ी कई सारी समस्याओं एवं विचलन का सामना कर रही है। जैसे–जैसे वह किशोरावस्था की ओर कदम रखती जाती है, उसे कई सारे मानसिक, शारीरिक एवं बौद्धिक बदलावों का अनुभव करना पड़ता है जिससे उनके आचरण एवं विचार गम्भीर रूप से प्रभावित होते हैं। यह युवा पीढ़ी के जीवन का एक ऐसा चरण होता है जहां उन्हें सच्चे मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। यह मार्गदर्शन उन्हें उनके माता–पिता, अभिभावक और मुख्य रूप से शिक्षक द्वारा ही प्राप्त हो सकता है।

युवा जीवन के इस चरण में कोई जरा सी चूक भी उनको दिशाहीन कर सकती है और वे अवसाद का शिकार होकर अपने भावनात्मक दर्द से निपटने के लिये कई सारी प्रतिकूल प्रतिक्रियायें करने लगते हैं, जैसे कि ़पढ़ाई की ओर एकाग्रता की कमी पैदा करने लगते हैं, स्कूल, कालेज में उपस्थिति कम होने लगती है। वे अपने अवसाद की 'आत्म औषधि' के रूप में नशीले पदार्थों का सेवन करने लगते हैं। वे कुरूपता की भावना महसूस करने लगते हैं। अपने आपको विफल मानते हुये शर्मशार होकर समाज से अपने आपको दूर करने लगते हैं। लापरवाह ड्राइविंग करते हैं, असुरक्षित यौन सम्बन्ध बनाये रखते हैं एवं नासमझी में कई बड़े गुनाह कर बैठते हैं।

यदि हम चाहते हैं कि आज का युवा अपने जीवन में सही दिशा और दशाओं को अपनाये तो जरूरी है कि हर अभिभावक एवं शिक्ष्क एक सच्चे मार्गदर्शक के रूप में युवाओं को विश्वास दिलाये कि वह हरदम उनके साथ हैं, उनके पास उनके सहयोग के लिये मौजूद है। उनको हर प्रकार का समर्थन देने के लिसे आगे बढ़े। उनकी हर बात को गम्भीरता से सुने एवं उस पर ध्यान दें। उनकी किसी भी बात की आलोचना न करें। अवांछित सलाह देने से बचें एवं किसी भी प्रकार की अल्टीमेटम से बचें। हमें चाहिये कि हम उनकी भावनाओं का सम्मान करें। उनकी गल्तियों पर दण्डित करने की बजाये उनकों समझायें। दूसरों के सामने कोई भी ऐसा कटू कथन न दें जिससे उनके दिल को ठेस पहुँचें।

माता–पिता के लिये यह आवश्यक है कि वह ज्यादा से ज्यादा समय देने का प्रयास करें। उनके कैरियर एवं जीवन सम्बन्धी महात्वकांक्षाओं के ऊपर अपनी इच्छाओं को हावी न होने दें। वह जो करना चाहता है, यदि वह अभिभावक की नजर में उचित नही है उसके विपरीत किसी प्रकार का निर्णय न देते हुये सही क्या है के बारें में विस्तृत जानकारी दें।

हमारा दायित्व है कि हम अपने बच्चों को इस सच्चाई से अवगत करायें कि वह प्रतिभाशाली है और उसमें असीमित क्षमतायें हैं। उसमें वह ताकत है कि किसी भी काम को अगर करने की ठान लें तो उसे हर हाल पूरा कर सकता है।

असफलता पर निराश होना स्वभाविक है लेकिन हमें इस स्वभाव को बदलना होगा एवं अपनी किसी भी असफलता से थेड़ी देर के लिये उदास हो सकते हैं लेकिन निराश नही होना चाहिये। निराशा से हमारी क्षमताओं में कमी आती है। इसलिये असफलता के बाद फिर से पूरे जोश के साथ उस कार्य को पूरा करने के लिये कोशिश करे, आप अपने उज्ज्वल भविष्य को प्राप्त करेगें और समाज एवं देश को गौरवशाली बनायेंगे।